International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582–2160, Volume: 4, Issue: 4, July-August 2022

# शिक्षा और संप्रेषण

प्रभाकर उपमन्यु

शोधछात्र
निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

## संक्षेप

संप्रेषण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच मौखिक, लिखित, सांकेतिक या प्रतीकात्मक माध्यम से विचार एवं सूचनाओं के प्रेषण की प्रक्रिया है। संप्रेषण हेतु सन्देश का होना आवश्यक है। संप्रेषण में पहला पक्ष प्रेषक (सन्देश भेजने वाला) तथा दूसरा पक्ष प्रेषणी (सन्देश प्राप्तकर्ता) होता है। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के द्वारा ज्ञान, समझ, कौशल, रुचि, अभिवृत्ति आदि अजित कर सकते हैं। इसके द्वारा छात्र पूर्ण शुद्धता एवं तीव्र गति के साथ सूचनाओं को एक साथ प्राप्त कर सकते हैं। सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के माध्यम से छात्र अपनी क्षमता, आवश्यकता एवं गति के अनुसार स्व-अनुदेशन प्राप्त कर सकते हैं।

**शब्दकुंजी:** शिक्षा, सम्प्रेषण, तकनीकि, विचार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण

भारत देश ज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरु कहा जाता है जिसका आधार वेद ऋषि मुनि दार्शनिक शिक्षाविद आज की वैचारिक संपदा ही है। देश-विदेश में वैचारिक संपदा का वितरण संप्रेषण द्वारा ही संभव है। प्रत्येक देश की स्थिति उसका महत्व उसके विचारों के संप्रेषण से ही सिद्ध होता है। राष्ट्रीय स्तर पर संप्रेषण ही संप्रेषण का सशक्त माध्यम है । अंतरराष्ट्रीय संबंधों की मजबूती देशों की आपसी विचारधारा तथा संप्रेषण ही बनाती हैं।

संप्रेषण एक सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मानवीय संबंध स्थापित होकर दृढ़ तथा विकसित होते हैं। बिना संप्रेषण के सामाजिक जीवन की कल्पना करना ही मुश्किल है। संप्रेषण माननीय तथा सामाजिक वातावरण को बनाए रखने का कार्य करता है। इस प्रकार संप्रेषण एक पारस्परिक संबंध स्थापित करने का कार्य करता है। इस प्रकार संप्रेषण एक पारस्परिक संबंध स्थापित करने की एक प्रक्रिया है। जिसमें विचार-विमर्श तथा विचार-विनिमय पर विशेष ध्यान दिया जाता है। संप्रेषण में व्यक्तियों के व्यक्तिगत प्रत्यक्षीकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यह सूचना की तरह नहीं है, इसमें तर्क औपचारिकता तथा व्यक्तिगत होती है, क्योंकि जब तक पुस्तक या टीवी सूचना माध्यमों को खोला ना जाए पुस्तक पर ही ना जाए। तब तक संप्रेषण संभव नहीं है। इस तरह सूचनाएं वस्तुनिष्ठ होती हैं। संप्रेषण में सूचना प्रदान की जाती है। आदेश या संदेश प्रेषित किए जाते हैं। परस्पर विश्वास जागृत कर समन्वय स्थापित करना संप्रेषण का कार्य है। संप्रेषण में विचारों या सूचनाओं को मौखिक-लिखित या सांकेतिक रूप में प्रेषित कर ग्रहण किया जाता है। दर्शन के अनुसार प्रकृत ही ज्ञान है और मानव के मस्तिष्क में रहता है, मात्र जाने हुए ज्ञान को छात्रों को पहुंचाना है और इसके लिए हम जिस प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं, वही संप्रेषण है। शिक्षा द्वारा संप्रेषण को समृद्धशाली बनाया जाता है। शिक्षा प्राप्त करना मानव जीवन का एक मुख्य उद्देश्य है। क्योंकि शिक्षा ही जीवन और जीवन ही शिक्षा है।

शिक्षा लक्ष्य मनुष्य सर्वांगीण समुन्नति:
मन शरीर बुद्धि नामत्मनस्य यथाक्रमम।

अर्थात शिक्षा व प्रकाश है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान एवं वीर बनाती है। उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदेशों, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परंपराओं आदि सांस्कृतिक संपत्ति को इस प्रकार

हस्तांतरित करता है कि उनके हृदय में देश प्रेम की भावना प्रज्वलित हो जाती है। जिससे व्यक्ति व समाज दोनों की ही उन्नति होती है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य को समाज के लिए उपयोगी बनाया जाता है। शिक्षा भावी समाज का निर्माण करती है। मानव सभ्यता के विकास के प्रारंभ में लोग पढ़ना लिखना नहीं जानते थे। वह उस समय भी एक सामाजिक दायरे में रहते थे और संभवत ज्ञान उपार्जन के तरीके भी ढूंढ लिए थे। आज सारा विश्व इस बात पर एकमत है कि शिक्षा विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त ना करने वाले व्यक्ति को जीवन यापन करने में तथा जीवित रहने के कौशल सीखने में अनेकानेक कठिनाइयां होंगी। वह समय की गति से पिछड़ जाएगा और उसके जीवन की गुणवत्ता निश्चित रूप से अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुंच पाएगा। शिक्षा से व्यक्ति के जीवन को गति मिलती है और उसका प्रभाव व्यक्ति पर ही नहीं अपितु संपूर्ण समाज पर पड़ता है। शिक्षा के द्वारा समाज में शांति बनाए रखने योग्य न होने देने की संभावनाओं को बढ़ावा मिलता है।

## "शिक्षा युद्ध के विरुद्ध है"

शिक्षा का वास्तविक अर्थ एवं उद्देश्य भावी नागरिकों को व्यक्तिगत महत्व, आत्म-गौरव, समाजोपयोगी क्षमताओं का विकास कर उनमें आत्म-जागृत, आत्म-उन्नति तथा सामाजिकता की भावना का विकास करना है। प्रचार प्रसार करना है। यह सभी बातें लोक संप्रेषण के अंतर्गत आती हैं। लोक संप्रेषण की प्रकृति सामूहिक होती है, इस प्रकार के संप्रेषण में अधिकतर संदेश देने वाले व्यक्ति से आमने सामने बात नहीं हो सकता। कंप्यूटर द्वारा शिक्षा यूजीसी, इग्नू आदि टेलीविजन के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम छात्रों के लिए तैयार कर प्रसारित कर रहे हैं। इसी प्रकार शिक्षा में उच्च तकनीकी का प्रयोग किया जा रहा है। प्रदेश की माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्कूलों में कंप्यूटर लैब स्थापित करने का काम शुरू कर दिया गया है। भारत सरकार के आरटीसी प्रोजेक्ट के तहत विद्यार्थियों को कंप्यूटर शिक्षा नि:शुल्क मिलेगा। विद्यालय में विषय आधारित अध्ययन के अलग से सॉफ्टवेयर बनाए जाएंगे अर्थात पहले चरण में विद्यार्थियों को कंप्यूटर से कंप्यूटर शिक्षा पढ़ाई जाएगी सॉफ्टवेयर तैयार होने के बाद में गणित-विज्ञान की शिक्षा भी कंप्यूटर से प्राप्त कर सकेंगे। इस प्रकार गुप्ता (१९९३) के शब्दों में राष्ट्र के निर्माण में लोक संप्रेषण का बहुत बड़ा हाथ होता है। लोक संप्रेषण में जनसंचार यंत्र है, जिसके द्वारा एक ही समाचार अथवा संदेश को एक बड़े जनमानस जो बहुत दूर दूर रहते हैं। तब तक की समय में एक साथ एवं आसानी से पहुंचाया जा सकता है। यह संचार माध्यम शिक्षण छात्रों को प्रेरणा देने के लिए कक्षा-शिक्षण में बने प्रतियों को पुनर्लम्बित करने के लिए सूचनाओं को समय के अनुसार संगठित करने के लिए शिक्षण को अधिक रोचक स्पष्ट तथा सार्वभौमिक बनाने के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए हैं।